

50872-50876

208

50872 - (विज्ञान भैरव)

50873 - (ज्ञान सार)

50874 - (तत्त्व सार)

50875 - (कील सुभाषित)

Acc. No. 50872

50876 - (पाश्चात्तर कला)

ज्ञान भैरव त्रिवेणीपत्र ।

ॐ

50872

निकुञ्ज भैरव श्रीबोपाजीमतं

यामितुगुह्युधरवंतुद्विमपुते॥५॥नदिवल् विठमेनमदकेमेन
वभनः॥परवंतिक्कलईनभकलईरवठवेग॥६॥~~पुतेपुमा~~
मंजुनभनपनिमोपंकिदिभंमयभा॥श्रीठैरवः॥भापभापइ
यपुपुंउउगणभिंमदग॥गुदनीयउमंठइउषापिकषयभिउ
यकिदिइकलंउपंठैरवभृप्रकीतिउभा॥उमभारउयमेविवि
ह्यंमनएलवग॥७॥भायभृपभंमेवगवचनगंरुभभा॥पु
नंजंइउउमीरंरियरुभृवडिरभा॥८॥केवलंवल्लिउंभं

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विकल्प विदुः उद्भवः ॥ उद्भव उद्भव उद्भवः ॥ उद्भव उद्भव उद्भवः ॥
नमः पित्रि मित्रे देवे नमः सति इत्युक्तः ॥ नमः पित्रि देवे नमः ॥
नमः वरिणैः कः ॥ नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
वन्दुमतीनां पतञ्जल विनीषिकः ॥ भद्रं भद्रं कुरु सर्वत्र ॥
भद्रं भद्रं उभा ॥ पिकाल कलराती उद्भव मेद्म मा विमेषिणी ॥ तु
पुद्गल भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं ॥ भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
ल्लभ्यते गौरी ॥ यवज्जल विदुः कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु ॥ उद्भव

श्री
॥ श्री ॥
॥ ९ ॥

श्रीः

उद्धतेऽप्येवंविधं विप्रप्रयत्नम् ॥ एवं विष्णु उद्धतः
प्रहः कश्चिदपि ॥ एवं विष्णुः सवभुयः वभुः पविर्गीय
ते ॥ भाषापरतुपः सवभुयः प्रकीर्तितः ॥ मज्जिमज्जिमते
रभुः सवभुयः मवमभितः ॥ सवभुयः सवभुयः सवभुयः
पवभुयः ॥ सवभुयः सवभुयः सवभुयः सवभुयः ॥ केवलं
सवभुयः सवभुयः सवभुयः सवभुयः ॥ सवभुयः सवभुयः सवभुयः सवभुयः

०७

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०७ ॥ उद्गमो मिव तु पीपुष्पे वीभाषे भिरुमुते ॥ १०८ ॥
यस्य लोके रमी पशुकिरले कृष्ण भुवः ॥ सुयते मिमिषि ठगा
उद्गमो मिवः प्रिये ॥ १०९ ॥ श्री देवी उवाच ॥ देवदेव इति पुल
क कपाल दत्त दुष ॥ मिग मकल मुट मट पदे मविव
लिता ॥ यम किठ रिता कग ठैरव भुपल हता ॥ कैम पयै अ
पुता भुः परादेवः कषेल केता ॥ यम भभु गदं वेदिता उवाच ॥

श्रीः
३

कृत्ति ठैरवा॥ ३३॥ श्री ठैरव उवम॥ उचं पू लं दु एणी वं
विमन इ प रं स गे उ॥ उरु डि द्वि उय भु रं ठ ग ल म्भ रि उ
जि डिः॥ ३३॥ भन उं उ उदि चा पि वि य इ य म्भ रि वं उ न उ॥
ठैरव ठैरव भुं ठैर वि ह ए उ व प्रः॥ ३४॥ र व ए व वि म्भ
सु डि म्भ न म्भ पा वि क भ उ॥ रि चि क ल्द उ या भ म्भ उ या
ठैरव उ प प उ॥ ३५॥ क भि उ यो म्भ उ वा पि प्र रि उ व य म्भ

現
子

ॐ ह्रीं क्लीं पद्मे नमः ॥ भित्तिकलं भनः नडमवरे (वर्गमे
नः ॥ ३॥ मिपिपदौ सिद्धिपुपे नः नलैः पुत्रपद्मकभा ॥
शुभं यत्तु नडग पुत्रे नः नलैः पुत्रपद्मकभा ॥ ३० ॥ गं नः नलैः पुत्रपद्मकभा
नलैः पुत्रपद्मकभा ॥ ३१ ॥ कपल नडग पुत्रे नः नलैः पुत्रपद्मकभा ॥
नलैः पुत्रपद्मकभा ॥ ३२ ॥ कपल नडग पुत्रे नः नलैः पुत्रपद्मकभा ॥
नलैः पुत्रपद्मकभा ॥ ३३ ॥ कपल नडग पुत्रे नः नलैः पुत्रपद्मकभा ॥

मपुम उ विमभ्रश्वतुपय॥ ए उ उ हेमय मिश्र उ यगैवः
प्रकमते॥ ३५॥ कगमदूरागमु हं रुमद्वुरगोपनश॥
पु विमैरुमलीरुतमपेपरभास्त्रिः॥ ३६॥ एम उः हं रु
मभ्रुतमद्वुरागिडिलकदतिभा॥ विमंमिषाउरुमयेल
याउएयउलयः॥ ३७॥ मरदउप इकलुरुग्रमवमभ्रि
रुता॥ मववद्वुरागिडिलकदतिभा॥ ३८॥ प

मू.
५

पिङ्गुपञ्चमः कलचक्रमेव

विष्णो मन्त्रे भवमिच्छं यथापमृचयेद्वि यता॥ विचिकित्ता ॥
मुमुक्षु विद्युच्चं प्रवडता॥ १३॥ पृषु पुत्रं प्रलभु तं यथापमृ
चयेच्च यः॥ मरीरिगपदि ॥ मन्त्रं पुत्रं भवतु वता॥ १४॥ पृ
षु पुत्रं प्रलभु तं हवयेद्विगभा॥ यथापविचिकित्ता
॥ विचिकित्ता यमुतः॥ १५॥ उत्र मन्त्रं पुत्रं यथा ॥ मन्त्रं
विचिकित्ता॥ विचिकित्ता विचिकित्ता मन्त्रं पठता॥

मौ

यप्रउभयइउइइममाउभरः द्विपेउ॥प्रतिवादी
कउचैलइउंमिरेइवेउ॥५०॥कलाप्रिउकलप्रगइडि
उइभकंपंगभा॥प्रपुंविमिउयेउम'उ'कभभुमठवेउ॥५१॥
प्रभमेवणगइचंदगुंएइविकल्पउः॥अउमैउभःपं
भःप्रठवपैमठवेउ॥५२॥भदेदेणगउंवापिअइभइ
कगलिम॥उइरियाउमलयेणइउंउंएउपग॥५३॥पा

मू
१

ॐ मङ्गलं माङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ प्रविष्टुं मङ्गलं मङ्गलं
कः मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ ५॥ क्व वरं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं
मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ क्व वरं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ ५॥
मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ क्व वरं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ ५॥
मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ क्व वरं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ ५॥
मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ क्व वरं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ ५॥
मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ क्व वरं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ ५॥
मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ क्व वरं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं ॥ ५॥

ਸ੍ਰੀ:

ਸਿਭ ਆਰਾਧਿ ਪਿੰਡੀ ਭੁਭਾ ਵਿਰਿਦਿ ਪੇਸ ॥ ਭੁਲਯੰਤ ਭੁਭਾ
ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ॥ ੫੩ ॥ ਵਿਲੀਰੇ ਮਾਮੇ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ
੫੪ ॥ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ॥ ੫੫ ॥ ਭੁਭਾ
ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ॥ ੫੬ ॥ ਭੁਭਾ
ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ॥ ੫੭ ॥ ਭੁਭਾ
ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ॥ ੫੮ ॥ ਭੁਭਾ
ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ਭੁਭਾ ॥ ੫੯ ॥ ਭੁਭਾ

ਸ੍ਰੀ:
੩

रभनभपयभेदुवः॥१०॥ वायुश्चयमुभदुदुदुचंरद्विरु
उः॥ योगीभभइविद्वरभभदुभनठणरभा॥११॥ भचंणग
इददवभ'रगठरिठ'भ'न' यगपश्चभउरैवपग'र'भ'यै
कवेउ॥१२॥ ऊदरेनप्रयैगेनभदुपत्रभगद्वल'भभ'द
डिभदुन'यैरउइप्रक'मउ॥१३॥ भचभूउ'रि'ण'प्र'ल
म'दु'प्र'मा'य'नः॥ पिपीलभचवेलयाप्रषउपरभंभ'पभा॥

वद्विचिषभभण्डमिडंभापभयंदिपेडा कवलंवाप्रलंवा
भगवन्स्यण्डे ॥ ५७ ॥ मक्तिभद्रभभंकावूमडासंभानि
क ॥ यडापेवद्रउड्डुभुउडापेवडासंभुउ ॥ ५८ ॥ लेदराभु
रकेलैःभ्रीभापभुकराडा ॥ ५९ ॥ मडाठवेपिमवेमिठवेमंर
मभ्रवः ॥ ६० ॥ सुनकाभद्रतिप्रपुसुपुवनरुवामिगडा ॥ सुनकाभ
मुउण्डउलयाडमरेकवे ॥ ६१ ॥ एगिपारदंडेलमभन

म विष्णु भुज्जु ॥ ८ वयसु रिउ वसुं भदर सुउठ वउ ॥ १० ॥
गीउ मि विषय भुग भुभ भौ ऐक उ दनः ॥ ये गिर सुभ सुइने
भुउ सु सुग सुउ ॥ १० ॥ चइय इ भर सु विभु न सुइ वण यउ उ
उउ उउ पग र सु भुपुं मे प्रक मउ ॥ १३ ॥ अर गा उ या रि सु यं
॥ पुठ दु गो मरे भव सु भर भग भु पग मी प्रक मउ ॥ १३ ॥
उ ए भ भद मी पा मर क म म वली नउ ॥ सु विं रि वे सु उ इ व सु

ॐ विष्णु भू लोका ॥ कवयस्तु रिता वसुं भद्रास्तु कवता ॥ ॥

मीरु प्रिषिधय'भ्र'मभभभैष्टैकड'भ्रनः॥ येगिरभुमयुडेन

॥ १० ॥ च इत्यहं भवमुपि अहं भवमुद्रवणं यदेत

उड्डुपगयस्रभकुपंमप्रकमडे॥१३॥अरगाडयादिद्रयं॥

॥ पुनः दुर्गमो भवभुभरभगष्टपरदेवीप्रकमउ ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं अदम्योपायं कर्ममवलीनम् ॥ मृष्टिं विवेमुत इवम्

ॐ पुं प्रक मउ ॥ ११ ॥ कगदि ७० ३० परय ७० ७० लेलिद रय ॥
पिमदा म्भुषिकलेम पराशुभिः प्रक मउ ॥ १४ ॥ भद्र भव भिष्ट ए
क ७० भुप ७० रिग प्रयभा ॥ रिग यउ ७० भद्र रप रि प्रक भवि
७० ७० ॥ १० ॥ उप विष्ट भव भभुग ७० द्रव द्रव ७० छि ७० ॥ क ह
७० भिभरः ७० व छ भभाया डिउ हया ७० ॥ ११ ॥ भुल उप भु
७० भुभुं म्भुषिं रिपा उय ७० ॥ भुमि ७० रिग ७० भव द्रव मि

वं वृणोत ॥ १३ ॥ मष्ट एण्डे भुं निउ भु मष्टे रिदि पृष्टे कउ ॥
देष्वां भरमः कचं भुउः माउ प्रलीयउ ॥ १७ ॥ सुभरे समय
इति इ रिगाणं विहः स्येउ ॥ भुदे दं भरमिहो लोहा ॥
हो ॥ समये कवेउ ॥ ३० ॥ मल भरे भिउ भु स म रे च म दे द
लरउ ॥ प्रमां भु भ रम कवे दि वि मि ह्ये पाभा प्रयाउ ॥ ३० ॥
ली रं भ विदिय कचं ठे ग व डे र क व येउ ॥ उ कचं ठे ग व कं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३० ॥ अविममविममं म अविममं
उमदरा ॥ ३१ ॥ उमेतिमे विमदम सुरी ॥ ३२ ॥ पयम सुरी ॥ ३३ ॥ म
विमन भुवल् भु विमन भु मिडिं कुन ॥ ३४ ॥ विगण ॥ ३५ ॥ मिडि
भु मे सु द्र मर उर भा ॥ ३६ ॥ उमे कयं भु म सु रं ए ये मि पि
उर व उ म ॥ ३७ ॥ विग मू य मि डि सु डि भु उ पं न न ये उ म ॥ ३८ ॥
कि डि म सु वि वि सु मे डी कु भु सु मि र उ उ ॥ ३९ ॥ उ मे व ये उ म

५३
०३
यं कलैश्वरीनिमलगातिः॥७॥ मिड्डुडुः वडिनासिभ
भाउडुदयेमिडि॥ विकल्पाभमठवेरविकल्पं नस्त्रिड
ठडेड॥ भयाविभेदरीरभकलयकुलरंभ्रिडभा॥६
डुमिड्डुं पंअंकलयत्रपाषगठवेड॥७७॥ रागिगीकुं
मभरुत्राभवलेकमभेरयेड॥ यडपवमभ्रुडुडुडुडुडु
रलीयड॥ यमभमकुनरुत्रासुंरंरकभुमभ्रिवा॥ उडुडु

कउडकउडमुलोरमुअनैठवेडा॥७२॥५कयभसव
खउमिउंरेवेमयेडा॥मुअवदुररुयेडामुउमुअमवरभा॥७३॥
दिमाणगंकवहुररिदिभिउंरुम'कभा॥उडउकमुमिनेउ
देवंहपामिवःप्रिये॥७४॥पिडुअभवदेदेप्रविमधैरपमु
ऊरपिडा॥अउअउअयंमचंरुवयेकवणिणरः॥७५॥कम
रूपलैरुभेदममम'अदगोगे॥वडिंदिभिभिउंरुअउउ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कृष्णाय नमः ॥ ७४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पद्मे नमः ॥ ७५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
मिष्टो ॥ ० ॥ विदय रिरादेद भुं भवेत्ता भुं डिठ वयडा ॥
मेरभनभामा/भुं राते दिष्टा भापीठवेडा ॥ ० ॥ ॥ एदेय
न विष्टरभिष्ट भुं वाभमातुरा ॥ नैव भवेत्ता भुं डिठ वयत्रि

॥ भुवैभयवद्रहल'क'प्रै'क'गवेः॥ भभैवठै'र'भु'उ
वि'भ'क'हु'वि'रि'ज'उः॥ १॥ ह'हु'ह'हु'सरी'ग'लि'ड'प'उ'उ'वि'प'
उ'ग'उ'॥ दो'क'म'जि'वि'ग'भ'प'ग'भ'ह'य'उ'म'॥ ३॥ सु'प'प'इ'
प'य'म'हु'ग'र'सि'ड'ल'य'र'वा'॥ ए'उ'म'जि'भ'भा'व'म'ह'क'भु'
ठ'र'व'व'प'॥ ७॥ भ'भ'प'य'भि'म'ठ'द'म'भ'भ'ग'र'ग'ये'॥ के'
व'भु'ए'ग'उ'भ'हु'र'इ'ये'भु'भ'भ'इ'ये'॥ ०॥ कु'पा'दिके'भ'द'ग'

उभिरुपरि सिरीद ॥ ७३ ॥ अवि कल मउ मभु मभु
नि उल सभु ॥ ७४ ॥ यइ यइ मने या उता हू व हू उ
रपि य ॥ ७५ ॥ उइ उइ मि व व भु हा प क इ इ या भु डि ॥ ७६ ॥ य
इ य इ द म भ ज ॥ ७७ ॥ यै उ उं ह ह उ उ पु क ॥ ७८ ॥ उ भ उ म इ ण मि
इ भिल य भु रि उ इ उ ॥ ७९ ॥ क उ ह उ क य म क ग क
र व ग ॥ ८० ॥ उ क रु ल क ण ह उ व द म इ म भी प ग ॥ ८१ ॥

ति ०३। यइयउ मरैया। तिउउउ रेवउउ ॥ पा
उउरवभिउ। किस्त्रिह्नुदभ्नुउ सुदिः भाउ। भूः
मः ०५ मे १ नसुमिह्नु सुमिभुभ विचिकल्लेठवोम
ति ॥ ०७ ॥ भवउउरवठवंभाभाउमुवगीमग ॥ १ मउउ
तिरके ॥ पगिभुीह्नुयाभतिः ॥ ७ ॥ भमः मशेषभिउ
मभमभनवभनये ॥ इदः ॥ परिपुल्लइ मिउइ

ॐ भ्राणी ठवेउ ॥ १० ॥ ॐ ऋषं रुषये ऋषि रगां रुषये ऋषि उ
रगां रुषये विरि ऋषि मे ऋषये वद प्रमदति ॥ ११ ॥ यम वदुच
दगां रुषये वदुचं यम रुषये गभा ॥ उरुचं रुषये वदुचं उरुचं
वपम रुषये ॥ १२ ॥ रिडे रिग मूये वदुचं पक कल रं रि
उ ॥ वदुचं कमे भरे ली रं रिग कं मभा विमउ ॥ १३ ॥ यश्य
इम रं या उड उडु वउ उडु ॥ परि उडु वदुचं उडु रिष

[illegible]

एवमेकश्चकवद्वस्तुयस्तुप्रकमज॥३३॥भरभंष्ट
रमजिगद्वमोतिमउपुयभा॥यमप्रियेपविद्विन्म
उद्वेवंप्रः॥३४॥विभुपद्वेपद्वमरंमउमकुंमभंनः॥
इममाहाणिकंमेवियस्तुइस्तुविरेणर॥३५॥अइस्तुक
उमयउंएयउंठैवभुयभा॥करोतिमचकमलिमाप
उपुस्तककः॥३६॥मणराभउमंतिमोलिभादिगु

त्रिः॥ ये गिरीनां प्रिये मे विभचमला पक्कं णिपः॥ ह्रीं वत्र
वाचि वत्र भो वत्र पि विमेषि उभा॥ श्री मे वृदागा॥ ७८८८८
गि विप्र मे व प र मे व भ द म र ग॥ ए व भ भु भ व भु यो ए पः
के ए प क स्र कः॥ ३३॥ ए य उ के भ द मे व प्र ए उ क स्र द प्र
३॥ द्रु य उ क भु व द मे य पा द इ मि कं क व भा॥ ३७॥ श्री
३॥ व उ व म॥ प व दि प्र क्रिया ग द्रु भु ले प्र व भ गे द ॥ ३७॥

कृयेकृ यः परकवैकवरकवृतेदियां॥ एपः भैरुश्रयंरग्नि
इन्द्राण्युरेसुमः॥ २०॥ एपंया रिञ्जलावद्वि विरक्त
रश्रया॥ रउ एनंमगीरा मिभापदभाद्रिकल्पा॥ २०॥ पु
भनप्रधुष्टेदभंतिः क्रियतेसुम॥ रिचिकलेभंदष्टेभि
भापु एष्टामिगलुयः॥ २३॥ अइकउमयजिभैयेइइउदि
राद्रिभा॥ गरिककउमइष्टाप्रिगइउप्रलुउ॥ २४॥ भदकु

इलयेवद्रुंउडाविषयादिकंभा॥द्रयउभरभाभाकंभदं
भयोरुभाभूमा॥२५॥यागैइपरभेसारिडविग्नरुलडा॥
रूपप्रद्रवपमरंइप्रद्रिषुभुपावति॥२६॥नद्रुमतिभ
भवेमभुद्रुंइरुवरपरा॥प्रवृषउभुउडुभुकप्रएकस्रद्रुपु
ति॥२७॥यैरेवप्रहृउरुहैभुद्रुउवापरापरा॥यस्रैवप्रएकः
भवःभाएवेमःकप्रराभा॥२८॥इएरुंविमेल्लीवउडु

या ऊतिल दितिः ॥ मी ऊ ऊ मा पराये वी परं द्वा इंपरा परा ॥ २० ॥
अमु भवरागं भिषु म्मद रम भये प्रग ॥ उया म्मद ममा वि
पुः परं ठे राव मा प्रया ज ॥ ५० ॥ एक विंम ऊ द्वा लि ध्व म्म
विमि व निम मा ॥ एपे म्मद म्म म्मि पु म्म ल ठे म्म ल ठे एदः ॥ २० ॥
पउउ क विउं गुदं परा म्म उ म्म उ म्म मा ॥ यमु क मु म्म म्मो म
१५ क मु म्म मी द्वि उ ॥ ५१ ॥ परा मि एप ल रु रे म्म ठे गु म्म प

मयेः॥ विविक्कलभडीरंडसीगा॥ भडभाडाभा॥ ५३॥ ठड
योगनवनभुदडडंडरिविमदकया॥ ग्राभंगणुप्रगंमेमंपरुद
डडभुकभा॥ ५४॥ भवभउडु रिडणुगुडुभउमंगदाल्
किमेमिगभिगुगैविभिगंपरभिमेणरभा॥ ५५॥ प्राप्त्रभ
पिप्रदडडुवमेयंपरभाभउभा॥ श्रीदेवदामा॥ देवमेव
भदमेवपारिडुपुभिमदुग॥ रुदुयाभलडडुभुभगभ

विष्णुः सर्वविद्यापारं पतः ॥

